हम मसीह का प्रचार करते हैं

पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 4:5 में यह कहकर हम पर प्रेरितों की शिक्षा के मुख्य विषय को प्रकट किया है: ''क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं।''

नये नियम की बहुत सी आयतों में यह तथ्य उभरकर सामने आता है। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के संदेश का मुख्य विषय मसीह था (देखिए प्रेरितों 2:36)। प्रेरितों 8 अध्याय में मन परिवर्तन की दो घटनाओं में भी फिलिप्पुस का मुख्य विषय मसीह ही था (देखिए पद 5, 35)। प्रेरितों के प्रचार का क्षेत्र विश्वव्यापी था और इसका प्रभाव क्रांतिकारी था। यहां तक कि प्रेरितों के शत्रुओं ने भी कहा कि उन्होंने जगत को उलटा-पुल्टा कर दिया है। अपने जीवन में पौलुस ने दो महाद्वीपों को हिलाया था और मृत्यु के बाद तो उसने कई महाद्वीपों को हिला दिया है।

मुट्ठी भर लोगों ने रोमी जगत पर विजय पा ली थी। उन्होंने यह विजय कैसे पाई? इस प्रश्न का उत्तर उन्होंने अपने ही शब्दों में दिया: ''हम मसीह का प्रचार करते हैं।'' उन्होंने यह नहीं कहा कि, ''हम मसीह *के बारे में* प्रचार करते हैं।'' मसीह का संदेश देने के लिए प्रेरित क्या प्रचार करते थे?

उसके परमेश्वर होने का

यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया था (यूहन्ना 19:7; मरकुस 14:61, 62; यूहन्ना 10:32-38; 14:8-11 भी देखिए)। परमेश्वर पिता ने उसे ''मेरा प्रिय पुत्र'' कहकर उसके परमेश्वर होने पर मुहर लगा दी थी। (मत्ती 3:17; 17:5)। आधुनिकतावादी लोग कह सकते हैं कि सब लोग परमेश्वर के पुत्र हैं, परन्तु कोई भी मानवीय जीव उस प्रकार से पुत्र नहीं है जैसे यीशु। वह परमेश्वर का ''इकलौता'' पुत्र है (यूहन्ना 3:16)। इब्रानियों 1:8-10 में हमें बताया गया है कि परमेश्वर ने पुत्र को सम्बोधित किया और उसे ''परमेश्वर'' कहा।

यीशु जब पृथ्वी पर था तो परमेश्वर होने की उसकी प्रत्येक योग्यता दिखाई गई थी।

उसने न्याय, पवित्रता, दया, प्रेम और यहां तक कि लोगों को क्षमा करने की शक्ति भी दिखाई थी। उसने अपने ईश्वरीय होने के तथ्य को प्रमाणित करने के लिए आश्चर्यकर्म भी किए थे (यूहन्ना 20:30, 31)। स्वाभाविक ही है कि हम पहली शताब्दी के प्रचार में मसीह के परमेश्वर होने की अपेक्षा करें, और ऐसा ही हुआ भी। उदाहरण के लिए, सुसमाचार के सबसे पहले प्रवचन में, प्रेरितों 2 में आश्चर्यकर्म करने वाले मसीह को प्रमाणित करने की बात की गई थी।

यीशु के परमेश्वर होने का प्रचार करने का अर्थ उसके मनुष्य होने से इन्कार करना नहीं है। वह परमेश्वर और मनुष्य दोनों था। वह ''मनुष्य का पुत्र'' और ''परमेश्वर का पुत्र'' था। वह ''शरीर में प्रगट हुआ'' (1 तीमुथियुस 3:16) परमेश्वर था। वह ''मनुष्य की समानता में हो गया'' (फिलिप्पियों 2:7) था।

उसका पूर्व अस्तित्व

यीशु को परमेश्वर प्रमाणित करने के बाद आइए इस अर्थ से स्थापित हुई अन्य शिक्षाओं को देखते हैं। आरम्भ करने के लिए, उसके पूर्व अस्तित्व पर विचार करना आवश्यक है। यीशु ने यह कहते हुए इस धारणा के बारे में समझाया कि, ''पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं'' (यूहन्ना 8:58)। यूहन्ना 17:5 में प्रार्थना करते हुए उसने कहा, ''और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहिले, मेरी तेरे साथ थी।'' यीशु ने इस सत्य पर ज़ोर दिया, इसलिए उसके चेलों के लेखों में यह बात पाकर हमें हैरानी नहीं होती। पढ़िए यूहन्ना 1:1-4; 1 यूहन्ना 1:1, 2; कुलुस्सियों 1:15-18; प्रकाशितवाक्य 1:8.

उसका मनुष्य बनना

यदि यीशु पृथ्वी पर आने से पहले से था, तो उसका आना उसका आरम्भ नहीं, बल्कि मनुष्य बनना था। यूहन्ना 1:14 और फिलिप्पियों 2:5-8 में हम उसके मनुष्य बनने के बारे में पढ़ते हैं।

मत्ती ने कहा है कि यीशु के जन्म से कुंवारी से जन्म की यशायाह की भविष्यवाणी पूरी हुई (मत्ती 1:22, 23)। जिस प्रकार यीशु का जन्म हुआ उसका न तो कोई उदाहरण है और न ही ऐसे कोई पैदा हो सकता है। यह हमारी समझ से परे है। बाइबल के बहुत से विद्वान प्राकृतिक व्याख्या में न समा सकने वाली बातों को निकाल देना चाहते हैं। फिर भी यीशु का प्रचार करने का अर्थ, उसके मनुष्य बनने का प्रचार करना है; और मनुष्य बनने का उसका ढंग कुंवारी से जन्म लेना था। कुंवारी से जन्म का इन्कार करके नये नियम के मसीह का प्रचार नहीं किया जा सकता।

उसका क्रूसारोहण

मसीह ने कहा था कि वह मरेगा (यूहन्ना 10:15)। पौलुस ने ''क्रूस पर चढ़ाए हुए

मसीह का'' प्रचार किया (1 कुरिन्थियों 1:23) और विशेष रूप से बताया कि ''यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया'' (1 कुरिन्थियों 15:3)। हमें बताया गया है, कि ''बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती'' (इब्रानियों 9:22)। बहुत से लोगों ने अपने प्रचार में से लहू और प्रायश्चित के लिए किसी बात का उल्लेख करना बन्द कर दिया है। हमारे पापों के लिए मसीह की मृत्यु के प्रचार के बिना उसका प्रचार नहीं किया जा सकता।

उसका पुनरुत्थान

प्रारम्भिक कलीसिया की सफलता का सबसे बड़ा कारण पुनरुत्थान की सच्चाई है। मसीह ने कहा था कि वह जी उठेगा (यूहन्ना 2:19-21) और बाद में उसने कहा, कि वह जी उठा है (प्रकाशितवाक्य 1:18)।

सुसमाचार के पहले प्रवचन से ही (प्रेरितों 2), प्रेरितों के प्रचार में पुनरुत्थान का विशेष स्थान था। कलीसिया की नींव इसी संदेश पर रखी गई है। क्या यह सत्य है या कलीसिया झूठ पर बनाई गई है ?

पुनरुत्थान के कारण ही प्रेरितों को नई सामर्थ मिली थी। उन्हें नये सिरे से मिली आशा और उनकी सफलता को किसी और ढंग से नहीं बताया जा सकता। जो कुछ उन्होंने देखा वह वास्तविक था। मसीह का प्रचार करने का अर्थ मसीह के मुर्दों में से जी उठने का प्रचार करना है।

राज्य

मसीह का प्रचार करने में राज्य अर्थात कलीसिया के बारे में सिखाना भी शामिल होना चाहिए (प्रेरितों 8:5, 12)। मसीह सिर है, और कलीसिया उसकी देह (इफिसियों 1:22, 23)। मिलाप देह में होता है (इफिसियों 2:16)। हम कलीसिया को छोड़कर मसीह का प्रचार नहीं कर सकते। मसीह का प्रचार करने के लिए, फिलिप्पुस ने परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया।

उसकी आज्ञाएं

जो कोई मसीह का प्रचार करने की इच्छा करता है उसके लिए आवश्यक है कि उसकी आज्ञाओं का प्रचार करे। मसीह की शिक्षाओं की उपेक्षा करके उसका प्रचार नहीं किया जा सकता है। कूश देश के मन्त्री के पास मसीह का वचन सुनाते हुए, फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता के बारे में सिखाया था (प्रेरितों 8:35, 36)। नहीं, हम बपतिस्मे को निकालकर मसीह का प्रचार नहीं कर सकते। यह तो उसकी आज्ञाओं में से एक है।

उसका द्वितीय आगमन

यीशु ने बताया कि वह दोबारा आएगा (यूहन्ना 14:1-3)। सफेद कपड़े पहने कुछ

लोगों (स्वर्गदूतों) ने प्रेरितों को आश्वासन दिया था कि यीशु फिर आएगा (प्रेरितों 1:11)। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने इसी सत्य की घोषणा की (इब्रानियों 9:28)। आत्मा की प्रेरणा पाए अन्य लेखकों ने भी इस बात को दोहराया कि मसीह के प्रचार का अर्थ उसके द्वितीय आगमन का प्रचार करना है।

सारांश

आज बहुत से लोग यीशु और उसके सुसमाचार की बड़ी-बड़ी सच्चाइयों का इन्कार कर रहे हैं। लोग यीशु के बारे में शिष्ट, लेकिन महत्वहीन बातें कहना चाहते हैं वे केवल यही स्वीकार करना चाहते हैं कि उसकी नीतियां बीमार समाज को चंगा करेंगी। साथ ही, वे उन्हीं तथ्यों का इन्कार करते हैं जिनका मसीह के प्रचार में ऐलान होना चाहिए। आज भी मसीह कुछ लोगों के लिए मूर्खता है और दूसरों के लिए ठोकर खाने का पत्थर (1 कुरिन्थियों 1:18; 1 पतरस 2:7, 8)।

''मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो ... ?'' (मत्ती 22:42)।